शोध पत्र- हिन्दी

मणिपुर की मार जनजाति की लोक-कथाओं में कथाभिप्राय

June,2013

* विद्यारानी नाओरेम ** प्रो. ह. सुवदनी देवी

* शोधार्थी , मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर, इम्फाल

मणिपुर, पूर्वोत्तर भारत के सीमान्त में स्थित, एक छोटा सा राज्य है जो अपनी चारों ओर पर्वत–मालाओं से घिरी हुई मनोरम जगह है। यह राज्य अपनी प्राकृतिक सुन्दरता एवं सांस्कृतिक सुसमृद्धता के कारण ही इसे 'द ज्वेल ऑफ इण्डिया' कहा गया है। मणिपुर न केवल अपने अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए ही प्रसिद्ध है वरन् अपने कला–कौशल, नृत्य–संगीत, खेल एवं अद्वितीय संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। विश्व विख्यात खेल पोलो का उद्‌गम स्थान भी मणिपुर है। भौगोलिक दृष्टि से यह राज्य पर्वतीय एवं घाटी दोनों के मेल से बना है। पर्वतीय भाग के अन्तर्गत अनेक जनजातियाँ आती हैं और घाटी के अन्तर्गत अनेक प्रकार के धार्मिक लोग निवास करते हैं, यथा–मैतै, मुस्लिम, इसाई आदि, जिसमें मैतै जाति सर्वप्रमुख है। यह कहने में अतिश्योक्ति नहीं होगी कि मणिपुर राज्य एक विशाल वृक्ष है और अनेक जातियाँ इस वृक्ष की शाखाएँ। मणिपुर, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से युक्त उत्तर–पूर्वी भारत का एक राज्य है जो 23°50 उत्तर से 25°47 उत्तरी अक्षांश तक तथा 93°2 पूर्व से 94°47 पूर्वी देशांतर तक स्थित है। मणिपुर का क्षेत्रफल 22,356 वर्ग किलोमिटर है, यानि पूरे भारत का क्षेत्रफल का 0.7 प्रतिशत। इस राज्य का अधिकांश भाग पर्वतीय क्षेत्र है तथा पर्वतों के बीचों–बीच समतल घाटी है। मणिपुर के उत्तर में नागालैंड, पूर्व में म्यानमार(बर्मा), पश्चिम में असम, दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम में मिजोरम एवं दक्षिण–पूर्व में बर्मा के चीन पर्वत आदि स्थित है।

International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0974-2832, (Print) E- ISSN- 2320-5474, June,2013 , VOL - IV * ISSUE- 53

मणिपुर में मान्यता प्राप्त करने वाली तैंतीस जनजातियों में से एक है– मार जनजाति। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार मार जनजाति की जनसंख्या 42,690 थी। मार जनजाति के वहाँ 24 विभिन्न वंश हैं और इन 24 वंशों के अंतर्गत 180 और उप–वंश है। शादी–ब्याह के मामले में कोई विशेष प्रतिबंध नहीं है। कोई भी वंश किसी भी वर्ग के साथ शादी कर सकती है, सिवाय बहन के। लड़कों के लिए शादी करने का उम्र 22–31 वर्ष है और लड़कियों के लिए 18–27 वर्ष। अधिकांशतः शादी अक्टूबर से मार्च महीने में की जाती है, क्योंकि इस समय गाँववाले खेती–बारी के कार्यों से मुक्त होते हैं। मार समाज में परम्परित मार परिवार पुरूष प्रधान होता है और परिवार का प्रमुख पिता होता है। किसी भी मामले पर पिता का निर्णय सबको अमल करना पड़ता है और उसका निर्णय आखिरी निर्णय होता है। मार समाज में पूर्वजों की सम्पत्ति पर पुरूषों का ही अधिकार है। मार लोग मुख्य रूप से खेती करते हैं। इसी कारण ज्यादातर मार त्योहारों का संबंध खेती से होता है। वे मुख्य रूप से सीढ़ीनुमा खेती करते हैं। बुनाई करना, शिकार करना, मछली पकड़ना, कुम्हार का काम करना आदि उनके मुख्य काम है। मृत्यु होने पर मार लोग शव को दफनाते हैं।

'अभिप्राय' अंग्रेजी शब्द 'मोटिफ' का हिन्दी पर्याय है, जिसका अर्थ मूल–भाव या आशय होता है। टी.शिप्ले ने मोटिफ सम्बन्धी विचारों को 'डिक्शनरी ऑफ वर्ल्ड लिटरेरी टर्म्स' में इस तरह परिभाषित किया ''। word or a Pattern of thought which recurs in a similar situation or to evoke a similar mood within a work or in various works of a genre."

अर्थात अभिप्राय को एक ऐसा शब्द अथवा विचारों का प्रारूप माना है जो किसी एक रचना में अथवा एक वर्ग की विभिन्न रचनाओं में समान परिस्थिति में घटित होता है अथवा समान भाव को उत्पन्न करता है।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने 'मोटिफ' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है–''साधारणतया मोटिफ शब्द का प्रयोग परम्परागत कथाओं के किसी तत्व के लिए किया जाता है। परन्तु इस बात का स्मरण रखना चाहिए कि परम्परा का वास्तविक अंग बनने के लिए यह तत्व ऐसा प्रसिद्ध होना चाहिए कि इसे सर्वसाधारण जनता स्मरण रख सके। अतएव यह तत्व साधारण न होकर, असाधारण होना चाहिए।''

स्टिथ थॉमसन के विचार में अभिप्राय कथा का लघुतम तत्व है, जो परम्परा में स्थिर रूप से रहने की शक्ति रखता है। इस प्रकार की शक्ति रखने के लिए उसमें कुछ असाधारणता और अपूर्वता होनी चाहिए। अभिप्राय कथानक के निर्माण–तत्व है। उन्होंने अभिप्रायों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है– प्रथम– कर्ता–कथाओं में देवता, असाधारण पशु, आश्चर्यजनक प्राणी जैसे– चुड़ैल, राक्षस, अप्सरा और परम्परित मानव–चरित्र जैसे प्रिय सबसे छोटा बच्चा या क्रुर सौतेली माँ। द्वितीय– कुछेक ऐसी वस्तुएँ जो कथा व्यापार में काम आनेवाली होती हैं : जादू की वस्तुएँ, असाधारण रिवाज, अनोखे विश्वास। तृतीय– स्थान कुछ एक घटनाओं का है जिनमें बहुत से अभिप्राय आ जाते हैं। अभिप्राय कथानक के सभी अंगों को अपने में समेटे हुए हैं क्योंकि कथानक 'घटना, चरित्र और कार्य के मेल' से बनता है। 'अभिप्राय' घटना के भी हो सकते हैं, चरित्र के भी और कार्य के भी। अभिप्राय कथानक का लोक–कथात्मक रूप है। जिस प्रकार कथानक के बिना कथा का अस्तित्व नहीं, उसी प्रकार प्रत्येक लोक कथा में किसी–न–किसी प्रकार का एक या अधिक अभिप्राय उपस्थित रहते हैं।

मणिपुर की जनजाति मार की लोक–कथा सीरेत एवं तेकाबेरीसोन के आधार पर हम यहाँ चर्चा करेंगे। दोनों लोक कथाओं की संक्षिप्त कथा निम्नानुसार क्रमशः दी जा रही है– 'सीरेत' नामक लोक–कथा का संक्षिप्त रूप यह है– एक गाँव में सीरेत नामक एक सुन्दर युवक और उसकी बहन रहते थे। अपनी सुन्दरता के लिए वह बहुत प्रसिद्ध था, यहाँ तक कि दुष्ट आत्मा भी उसकी सुन्दरता से मोहित थी। फूङनू नामक एक दुष्ट आत्मा उससे विवाह करना चाहती थी। एक दिन सीरेत और उसकी बहन सीढ़ीनुमा खेती की ओर जा रहे थे। फूङनू ने अपने आपको सड़क के किनारे लगने वाले एक सुन्दर फूल का रूप धारण किया और सीरेत की बहन का ध्यान आकर्षित करवाया। फूल को देख सीरेत की बहन उससे फूल तोड़ने के लिए कहती है। जैसे ही सीरेत उस फूल को तोड़ने के लिए कहती है। जैसे ही सीरेत उस फूल को तोड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ा, फूल फूङनू में परिवर्तित हो गई और सीरेत को पकड़कर बहन को वहाँ छोड़कर अपने घर ले गई। एक दिन फूङनू सीरेत को अकेला घर छोड़कर सब्जियाँ लेने निकली। उसके जाते ही सीरेत भी वहाँ से भाग निकला। भागते–भागते रास्ते में उसे एक वृद्ध आदमी ने कहा– 'बेटा, फूङनू से बचने का एक ही उपाय है, वह है, मुझे मारकर तुम मेरी खाल उतारो और तुम उसमें छूप जाओ।'' इस तरह वृद्ध आदमी ने अपनी जान गवा दी और सीरेत को उसकी खाल उतारकर छूपने दिया। इस तरह सीरेत वृद्ध आदमी की सहायता से फूङनू के हाथों से बच निकलता है।

उपर्युक्त लोक–कथा में दुष्ट आत्मा फूङनू का अपने आप को सड़क के किनारे लगे सुन्दर फूल का रूप धारण करना एक प्रकार का अभिप्राय माना जा सकता है। साथ ही साथ वृद्ध पुरुष का अपनी जान गँवाकर सीरेत की रक्षा करना भी एक अभिप्राय है। 'तेकाबेरीसोन' नामक लोक–कथा का संक्षिप्त रूप यह है– एक गाँव में सात भाई एक बहन और उनके पिता रहते थे। एक दिन सात भाई अपने पिता के साथ सीढ़ीनुमा खेती करने के लिए जंगल में पेड़ काटने गये। जब वे जंगल से लौट रहे थे तो रास्ते में एक बहुत बड़ी बेल को देखा। उनमें से एक ने अपनी ताकत को दिखाना चाहा और सबके सामने उसने यह प्रस्ताव रखा कि अगर उनमें से कोई भी इस बेल को एक ही झटके में काट न सके तो उसे जंगल में शेर की राह में रात भर गुजारना होगा। सब ने एक ही झटके में बड़ी बेल को काट डाली लेकिन उनके पिता काट नहीं पाया तो पिता को रात भर जंगल में रहना पड़ा। पिता को शेर ने मार डाला। सात भाइयों को पता चल गया कि उनके पिता को शेर ने मार डाला है तो वे शेर से बदला लेने के लिए हाथ में भाला लिये चल पड़े। चलने पर रास्ते में एक आदमी से भेंट हुई जिसके सिर पर एक टोकरी भर सरसों के बीज थे। सात भाइयों से उसने पूछा, वे कहाँ जा रहे हैं– तो जवाब दिया कि वे उनके पिता की हत्या का बदला लेने जा रहे हैं। फिर उस आदमी ने कहा– ''मैं इस टोकरी को खाली करता हूँ और तुम इन बीजों की गिनती कर लो, अगर गिनती करने में कुछ भी कम न पड़े तो तुम्हारी जीत होगी। अगर गिनती करने में कम पड़ गये तो हार जाओगे। गिनती करने पर एक बीज कम पड़ गया जिस कारण उस आदमी ने संदेहजनक बताया। उस आदमी की चेतावनी को अनसुना करके सात भाई आगे बढ़ते गये। वे चलते–चलते शेर के पास पहुँच गये। एक रात शेर के वहाँ रहे और सुबह हुई तो शेर के वहाँ रहने वाले मुर्गे ने बाँग दिया कि मेजबान का सौभाग्य हो तथा अतिथि का दुर्भाग्य हो। सात भाइयों को भी शेर द्वारा मार डाला गया। सात भाइयों की इकलौटी बहन थी। उसे यह खबर मिली कि उसके भाइयों को शेर ने मार डाला तो वह बहुत दुखी थी। एक दिन वह रोती हुई बैठ रही थी कि अचानक एक फल टपक पड़ा। उस फल को खाने से वह गर्भवती हो गया और कुछ समय बाद तेकाबेरीसोन को जन्म दिया। तेकाबेरीसोन अब बड़ा हो गया और अपने सात मामाओं के मारे जाने की बात सुनकर उसने प्रण किया कि वह उस शेर से बदला जरूर लेगा जिसने उसके मामाओं को मारा था। अपने बेटे को समझाते हुए माँ ने कहा कि अगर उसे बदला लेना है तो उसे स्वर्ग पर अपने पिता के पास जाना होगा और वहाँ से भाला लाना होगा। भाला लाने के लिए तेकाबेरीसोन ने तड़ित का अनुसरण करके अपने पिता के पास गया और एक चमकीला भाला लेकर लौटा। इसी भाला से उसने शेर को मार डाला।

इस प्रकार इस लोक–कथा में भावी आपत्ति की सूचना, किसी फल के खाने पर गर्भधारण करना एवं स्वर्ग गमन करना जैसे अभिप्राय मिलते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. V.P. Sharma, The Hmars of Manipur, Anmol publication, 1992.
2. N. Sanajaoba, Manipur : Past and Present, Vol. 3. , 1995
3. कृष्ण देव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद 2002.
4. डॉ. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर 2007
5. रूक्मिणी वैश्य, कुशल्लाभ के कथा साहित्य का लोक तात्विक अध्ययन, जयपुर, मान प्रिन्तर, 1979.
6. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोष, भाग– 1, ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी 2000.